म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

सम्पादक : अन्ना दुराई

Our Landmark...

Rajwada

बानगी

शब-ए-मालवा

मालवा के सुरम्य पठार के शिखर पर बसा इन्दौर शहर 22.43 डिग्री उत्तर अक्षांतर और पूर्व में 75.50 डिग्री देशांतर पर स्थित है। जैसे जैसे पठार मानपुर के बाद घाटी में नीचे की ओर ही बढ़ता जाता है, वैसे वैसे ही विंध्याचल और सतपुड़ा की अति सुंदर पर्वत श्रृंखलाएँ बावनगजा के यहाँ गले मिलती सी लगती है। इन्दौर के इर्द-गिर्द छोटी छोटी पर्वत श्रृंखलाएँ वस्तुतः विंध्याचल की ही शाखाएँ हैं जो मांडवगढ़ के यहाँ विराट रूप धारण कर लेती है। जलवायु की दृष्टि से इन्दौर शब-ए-मालवा के तहत आता है जहाँ का समीतोष्ण मौसम खुशनुमा ही रहा है। इन्दौर शहर की उत्पत्ति जूनी इन्दौर से इन्दौर के आज के नए रूप में परिवर्तन, किसी शायर की कल्पना को साकार करती है कि जमाना हमसे है, हम जमाने से नहीं। संपूर्ण भारत ही नहीं बल्कि विश्व में इन्दौर शहर की पहचान शब-ए-मालवा के रूप में है।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

देवी अहिल्याबाई होलकर

इन्दौर को आज भी देवी अहिल्याबाई होलकर के नाम से जाना जाता है। मालवा की सर्वजन कल्याणकारी प्रथम महिला शासिका के रूप में अहिल्याबाई ने दान, धर्म, परोपकार, सेवा, जीर्णोद्धार के उल्लेखनीय कार्य किए।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- पं. चुन्नीलाल महाराज
- नाना पलसीकर
- सरदार माधवराव कीबे
- डॉ. सरजूप्रसाद तिवारी

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

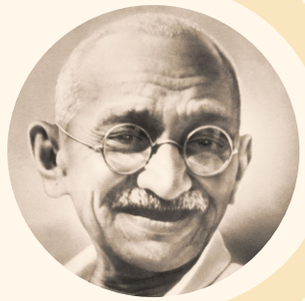

''इन्दौर शहर बेहद ही सौम्य, शांत और अच्छा शहर है। खासतौर पर मालवा भूमि में आकर मुझे विशेष अनुभूति हुई है। नगरवासियों की अपार आत्मीयता, अपनापन और प्रेम देखकर मन भी प्रफुल्लित हो उठा है।''

– महात्मा गांधी (इन्दौर में सन् 1918)

अतिथि देवो भवः

- मदर टेरेसा
- पं. मदनमोहन मालवीय
- अब्दुल गफ्फार खान
- सरदार वल्लभ पटेल

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

लता मंगेशकर

स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर का जन्म इन्दौर शहर में हुआ। भारत की सबसे लोकप्रिय एवं आदरणीय गायिका लताजी का आज तक का सफर उपलब्धियों से भरा हुआ है। लताजी ने लगभग 30 से अधिक भाषाओं में फिल्मी और गैर फिल्मी गाने गाए। लताजी की जादुई आवाज के, भारतीय उपमहाद्वीप के साथ पूरी दुनिया में लाखों की संख्या में दिवाने हैं।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

राजबाड़ा

होलकर शासकों के द्वारा बनवाई गई यह इमारत ढाई सौ साल पुरानी है। ऐतिहासिक महत्व की यह सात मंजिला इमारत शहर के बीचोबीच स्थित है। मराठा राजाओं के उपरांत कुछ समय तक निजी हाथों में रहने के बाद इस ऐतिहासिक धरोहर को सन् 1976 में आम जनता को समर्पित किया गया। यह महल मराठा, मुगल और फ्रेंच स्थापत्य कला के समावेश से बना है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- भारत में स्वच्छता में इन्दौर लगातार नम्बर वन
- भारत का तेजी से विकसित होता शहर इन्दौर

- मध्यप्रदेश की व्यवसायिक राजधानी है इन्दौर
- देश दुनिया के नक्शे पर तेजी से उभरा है इन्दौर

Our Strength....

Ariel View

बानगी

आधुनिक के साथ प्राचीन धारणाएँ भी

इन्दौर को आधुनिक नगर मानकर प्रायः इतिहासकारों व पुरातत्ववेत्ताओं ने यह धारणा बना ली थी कि इन्दौर का इतिहास तीन चार सौ वर्षों से अधिक पुराना नहीं है। इस प्रचलित मान्यता को खंडित करने वाली एक घटना उस समय घटित हुई जब एक मशहूर लेखक ने इन्दौर के पूर्वी भाग में आजाद नगर के समीप कुछ मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, हाथी दाँत की बनी चूड़ियाँ और ताम्रमुद्राएँ सन् 1971 में खोज निकाली। इस उपलब्धि ने पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकारों का खासा ध्यान इन्दौर शहर की ओर आकर्षित किया। इसके साथ ही आगे अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया। इस उपलब्धि की अनुगूँज भारतीय संसद तक जा पहुँची। संसद में जब घोषित किया गया कि आजाद नगर इन्दौर में हड़प्पाकालीन सभ्यता के अवशेषों की प्राप्ति हुई है तो इंदौरवासियों के हर्ष में असीमित वृद्धि देखते ही बनती थी।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

मल्हारराव होलकर

मल्हारावजी, होलकर राजवंश के पहले राजकुमार थे जिन्होंने इन्दौर शहर पर शासन किया। भारत में मराठा राजवंश को फैलाने में उनके योगदान के लिए पेशवाओं की ओर से उन्हें इन्दौर की बागडोर मिली थी।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- काशीनाथ त्रिवेदी
- वी.वी. द्रविड़
- छोटेलाल नकट्या
- विनायक सरवटे

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर एक सौम्य नगरी है। सर्वोदय की दृष्टि से इन्दौर की भूमि उपजाऊ है। एक बार जो आ जाए उसका यहाँ से जाने का मन नहीं करता। यहाँ की संस्कृति में ऊर्जा का भाव परिलक्षित होता है।''

– आचार्य विनोबा भावे (इन्दौर में सन् 1960)

अतिथि देवो भवः

- मौलाना आजाद
- सर्वपल्ली राधाकृष्णन
- डॉ. के. बी. हेडगेवार
- एम. एस. गोलवलकर

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

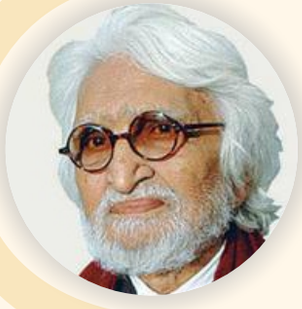

मकबूल फिदा हुसैन

विश्व प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन का जन्म एक बोहरा परिवार में हुआ। उनका पुरा बचपन इन्दौर शहर में बीता। भारत के पिकासो के नाम से ही जग प्रसिद्ध हुए एम.एफ. हुसैन ने कला जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी वे उतरे। वे राज्य सभा के लिए नामांकित हुए और भारत सरकार ने उन्हें पद्मविभूषण सम्मान से अलंकृत किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

- सॉफ्टवेयर सिटी के रूप में ख्यात होगा इन्दौर
- फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में अव्वल है इन्दौर शहर

शान

खजराना गणेश मंदिर

सन् 1028 से 1060 के मध्य यहाँ पराक्रमी परमार वंश के महाराजा भोज प्रथम का आधिपत्य था। लगभग उसी जमाने में नगर के खजराना ग्राम में प्राचीनतम चिंताहरण भगवान श्री गणेशजी की प्रतिमा प्रतिष्ठित हुई। अपनी मनोकामना लेकर यहाँ दूर दूर से श्रद्धालुगण दर्शन हेतु आते हैं। अधिकांश विशिष्ट आयोजनों का प्रथम न्यौता गणेशजी को ही दिया जाता है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- आधुनिक वस्त्र व्यवसाय में सुप्रसिद्ध है इन्दौर
- कृषि उत्पादन के लिए इन्दौर की जमीन उत्तम

Our Pride....

Gandhi Hall

बानगी

इन्दौर का उद्भव भी रोमांचकारी

भारत के पौराणिक आध्यात्मिक नगरों की तरह इन्दौर का उद्भव भी रोमांचकारी है। कहा जाता है कि राष्ट्रकूट शासक इन्द्र, जिसका कि मालवा पर शासन रहा था, के नाम पर इस नगर का नाम इन्द्रपुर पड़ा जो आगे चलकर इंदूर और फिर इन्दौर हो गया। एक अन्य किवंदति के अनुसार 1741 में यहाँ इंद्रेश्वर मंदिर की स्थापना हुई। इस मंदिर के नाम पर इस स्थान का नामकरण पहले इंद्रेश्वर फिर इंद्रपुर और आगे चलकर इन्दौर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। एक ऐतिहासिक तथ्य के आधार पर यह भी विश्वास किया जाता है कि महाराजा छत्रपति शिवाजी जब दिल्ली से औरंगजेब की कैद से छूटे और दक्षिण की ओर लौट रहे थे, तब वे महाकाल को नमन करने हेतु उज्जैन पधारे थे और लौटते समय चंद्रभागा के किनारे बसे एक हरे भरे गाँव में ठहरे थे, जो कालांतर में इन्दौर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आन

शिवाजीराव होलकर

शिवाजीराव होलकर बड़े ही सटीकतम एवं क्रांतिकारी निर्णय लेने के लिए प्रसिद्ध हुए। उनके राज में चांदी के सिक्के भी चलन में आए। खास तौर पर किसानों की भलाई के लिए भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किए।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- बैजनाथ महोदय
- नारायणसिंह सपूत
- लाभचंद छजलानी
- ख्यालीराम द्विवेदी

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर आकर मुझे सुखद अनुभूति हुई है। प्रसन्नता है मुझे यहाँ के लोगों से मिलने का अवसर मिला। यहाँ का आतिथ्य मेरे लिए स्मरणीय रहेगा। स्नेह एवं प्रेमपूर्ण भाव प्रदर्शित करने के लिए मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।''

– दलाई लामा (इन्दौर में सन् 2009)

अतिथि देवो भवः

- श्यामाप्रसाद मुखर्जी
- मोरारजी देसाई
- अशोक मेहता
- श्री श्री रविशंकर

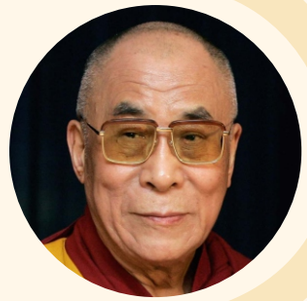

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

जानी वॉकर

प्रसिद्ध हास्य अभिनेता जानी वॉकर का इन्दौर से गहरा नाता रहा। इनका मूल नाम बहरूद्दीन जमालुद्दीन काजी था। श्री वॉकर ने अपने उम्दा और मन को गुदगुदाने वाले अभिनय से अपनी एक अलग पहचान बनाई। फिल्मों में उनकी मौजूदगी मात्र से ही मन खिल उठता था। पार्श्व गायक किशोर कुमार का शैक्षणिक जीवन भी इन्दौर में ही गुजरा। इन्दौर से जुड़ी उनकी कई यादें हैं।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

गांधी हॉल

इंडोगोथिक शैली और सिओनी स्टोन से बनी इस भव्य इमारत का नाम पहले किंग एडवर्ड हॉल था। 1904 में निर्माण हुआ। बाद में इसका नाम गांधी हॉल रखा गया। इस इमारत के गुंबद पर चारो ओर विशालकाय घड़ी लगी है। इस विशाल सभागृह का वास्तु मुंबई के स्टीवेंस ने तैयार किया था। गांधी हॉल परिसर में मनोरंजन के लिए आकर्षक पार्क भी है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- स्वादिष्ट नमकीन के लिए जग प्रसिद्ध है इन्दौर
- लाजवाब मिठाईयों के लिए मशहूर है इन्दौर
- देश विदेश को लुभाती है इन्दौर की चाट चौपाटी
- इन्दौरी खान पान सदैव रहा है आकर्षण का केन्द्र

Our Monuments....

बानगी

सभी आधाओं से सुरक्षित शहर

इन्दौर के बारे में एक दंत कथा के अनुसार कहा जाता है कि दो ज्योतिर्लिंगों के मध्य में बसा होने की वजह से यह नगर बाधाओं से सुरक्षित रहेगा। इसके एक ओर उज्जैन में महाकालेश्वर तो दूसरी ओर ओंकारेश्वर में ओंकार महादेव विराजमान हैं। आज इन्दौर का नाम राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर भी आलोकित है। इन्दौर खान और सरस्वती नदियों पर बसा है, जो एक युग में शिप्रा की सहायक नदियों के रूप में जानी जाती थी। ऐतिहासिक दृष्टि से इन्दौर की तुलना इंग्लैंड के वेस्टमिस्टर से की जाती है। इन्दौर के विकास में मराठों और होलकरों का विशिष्ट योगदान ही झलकता है। एक विदेशी घुमक्कड़ ने तो सन् 1937 में कहा था, मैं गत 35 वर्षों से दुनिया का भ्रमण कर रहा हूँ। मुझे एशिया महाद्वीप के भारत नामक देश में स्थित होलकर स्टेट की राजधानी इन्दौर सबसे अच्छा शहर लगा।

Lalbagh Palace

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

तुकोजीराव होलकर

तुकोजीराव होलकर को इन्दौर के वर्तमान स्वरूप के प्रणेता के रूप में जाना जाता है। जनता की भलाई के लिए उन्होंने कई कार्य किए। खासतौर पर शहर की जल व्यवस्था को सुचारू करने में उनकी विशेष भूमिका रही।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- मिश्रीलाल गंगवाल
- मनोहरसिंह मेहता
- कन्हैयालाल खादीवाला
- रामनारायण शास्त्री

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर में आकर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यहाँ के स्वागत सत्कार से मैं अभिभूत हूँ। यहाँ आने से पूर्व जैसा इसके बारे में सुना, वैसा ही पाया। मैं इन्दौर वासियों के आदरभाव हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।''

– जान मेजर (इन्दौर में सन् 1993)

अतिथि देवो भवः

- अल्बर्ड हावर्ड
- इवाईट एलन
- प्रिंस ऑफ बेल्स
- जॉन हेडलसन

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का इन्दौर से गहरा नाता रहा। इन्दौर के मिशन स्कूल में उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। ज्ञानपीठ व पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के 4 स्तंभो में से एक मानी जाती है। महाकवि निराला ने भी उन्हें हिन्दी के विशाल मंदिर की सरस्वती कहा। शिक्षाविद् डॉ. डी.एस. कोठारी ने भी इन्दौर का नाम रोशन किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

लालबाग पैलेस

शिवाजीराव होलकर द्वारा निर्मित अति भव्य लालबाग पैलेस होलकर राजवंश का प्रतीक है। यहाँ पर वर्साइल्स किले की शैली में सजावट की गई है। इटालियन मार्बल के कॉलम्स महल की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं। महल का मुख्य दरवाजा बकिंघम पैलेस की प्रतिकृति के स्वरूप में दिखाई देता है। भव्य शैडंलियर्स, बेशकीमती फारसी कालीन पर्यटकों को लुभाते हैं।

जो यहाँ की धरोहर है...

- धार्मिक आस्थाओं का प्रतीक है इन्दौर शहर
- इन्दौर व भोपाल के मध्य बनेगा ग्रीनफिल्ड एयरपोर्ट

- पानी और प्रकाश की उत्तम व्यवस्था है इन्दौर में
- वातावरण की दृष्टि से सुरम्य है इन्दौर शहर

Our Heritage....

Krishnapura Chhatris

बानगी

इन्दौर कस्बे का उत्कर्ष

इन्दौर कस्बे का उत्कर्ष 17 वीं शताब्दी में शुरू हुआ। एक मशहूर इतिहासकार के अनुसार राजा औरंगजेब के शासनकाल में 17 वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों के सनदों में कस्बा इन्दौर का उल्लेख मिलता है। 18 वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक प्रमुख प्रशासनिक मुख्यालय के स्वरूप में इन्दौर परगने का उल्लेख भी मिलता है। तब इन्दौर, सरकार उज्जैन, सूबा मालवा का परगना था। उज्जैन में मालवा का प्रशासनिक मुख्यालय था, जो मुगलों की सल्तनत में ही था। ऐसे उल्लेख लगभग सन् 1720 के दस्तावेजों में मिलते हैं। इसके बाद सन् 1724 के दस्तावेजों के संदर्भों में परिवर्तन मिलता है और तब इन्दौर को सूबा इन्दौर, सरकार उज्जैन, परगना कम्पेल कहा जाने लगा। उस समय तक होलकर सत्ता का भी उत्कर्ष नहीं हुआ था। होलकर घराने के सत्ता में आते ही इन्दौर शहर ने विभिन्न क्षेत्रों में विकास की गति पकड़ी।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

यशवंतराव होलकर

होलकर राज्य की जनता के सभी प्रकार के दुःख दर्दों में शामिल यशवंतराव होलकर ने इन्दौर को आदर्श और सर्वसुविधा संपन्न नगर बनाने में स्वयं को समर्पित कर दिया। उन्होंने सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- देवीप्रसाद भार्गव
- केशव चितले
- गोवर्धनलाल ओझा
- होमी दाजी

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''मालवा में आकर मन मानों तरोताजा हो उठा। यहाँ जब कभी आता हूँ मन को बेहद ही सुकून मिलता है। मालवा की माटी में शांति का भाव झलकता है। मालवा में इतनी मिठास है कि यहाँ आकर मन खिल उठता है।''

– पं. जवाहरलाल नेहरू (इन्दौर में सन् 1957)

अतिथि देवो भवः

- लालबहादुर शास्त्री
- इंदिरा गांधी
- चरण सिंह
- चंद्रशेखर

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

इन्दौर जिले के महू में जन्में डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक भारतीय विधिवेत्ता थे। बाबा साहेब के नाम से प्रसिद्ध हुए डॉ. अम्बेडकर ने अपना सारा जीवन ही हिन्दू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली एवं भारतीय समाज में सर्वव्यापित जाति व्यवस्था के विरूद्ध सतत् संघर्ष में बिता दिया। भारतीय संविधान के वास्तुकार बाबा साहेब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

कृष्णपुरा की छत्रियां

राजवंश के सदस्यों की स्मृतियों में तत्कालीन होलकर शासकों द्वारा निर्मित छत्रियां मराठा और मुगलकालीन स्थापत्य कला के सम्मिश्रण का बेजोड़ उदाहरण ही है। खास मौकों पर यहाँ आकर्षक विद्युत सज्जा की जाती है। रोशनी के रंगों में सराबोर यह छत्रियाँ मनमोहक छटा बिखेरती है। कृष्णपुरा की छत्रियाँ और छत्रिबाग इसी परिप्रेक्ष्य में बनाई गई है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- इन्दौर रेल्वे से जुड़े हैं देश के अधिकांश हिस्से
- विदेशों के लिए इन्दौर से सीधी हवाई सेवाएँ शुरू

- इंटर स्टेट एवं सिटी बसों से परिवहन इन्दौर में
- इन्दौर में मेट्रो रेल परियोजना का कार्य प्रगति पर

Our Culture....

Rang Panchmi

बानगी

देवी अहिल्या की नागरिक राजधानी

इन्दौर के विकास के प्रति सुबेदार मल्हारराव होलकर सदैव चिंतित रहते थे। एक बार उन्होंने स्वयं कानूनगो (राजस्व अधिकारी) को पत्र लिखा। इस पत्र में उन्होंने लिखा कि वे बाहर के ही व्यवसायियों और साहूकारों को इन्दौर आने तथा यहाँ आकर बसने के लिए प्रभावित व प्रोत्साहित करें, क्योंकि आपकी इसी योग्यता की चर्चा होती है। माता अहिल्याबाई को भी इन्दौर इतना पसंद आया कि उन्होंने यहाँ अस्थाई मुकाम किया। उन्होंने जिला अधिकारियों को आदेश दिया कि वे कार्यालय कम्पेल से इन्दौर स्थानांतरित करें और तब उन्होंने खान नदी के पार पुराने शहर के सामने नए शहर की स्थापना की। अहिल्याबाई के शासनकाल में इन्दौर का विकास तेजी से हुआ। वे स्वयं महेश्वर में रहती थी लेकिन इन्दौर को उन्होंने नागरिक राजधानी के रूप में चुना। आगे चलकर इन्दौर को राज्य की राजधानी भी बनाया।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

राव नंदलाल चौधरी

इन्दौर शहर के संस्थापक के रूप में राव नंदलाल चौधरी (जमींदार) को जाना जाता है। सरस्वती नदी किनारे, इंद्रेश्वर मंदिर के समीप से ही उन्होंने इन्दौर में बसाहट प्रारंभ की। अनेक परिवारों को उन्होंने इन्दौर में बसाया।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- कन्हैयालाल भंडारी
- ओंकारमल चुन्नीलाल
- बालकिशन मुछाल
- सीताराम परसरामपुरिया

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर में आकर मुझे सदैव बहुत अच्छा लगता है। यहाँ के लोगों में आत्मीयता का भाव झलकता है। इन्दौरवासी अपने स्वभाव की दृष्टि से बड़े ही स्नेही एवं व्यवहारिक होते हैं। यहाँ बार बार आने को मन करता है।''

– डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम (इन्दौर में सन् 2011)

अतिथि देवो भवः

- डॉ. राजेन्द्रप्रसाद
- नीलम संजीव रेड्डी
- डॉ. वेंकट रमण
- ज्ञानी जैलसिंह

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

उस्ताद आमिर खाँ

कला जगत में इन्दौर का नाम रोशन करने वालों में उस्ताद आमीर खां का नाम आदर से लिया जाता है। शास्त्रीय संगीत के महानतम गायक के रूप में मशहूर उस्ताद आमीर खां ने अपनी विशिष्ट शैली से देश और दुनिया में खासी पहचान स्थापित की। नियमित रियाज उनका दैनंदिन आध्यात्मिक कर्म था। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

बिजासन टेकरी

नगर के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित श्री बिजासन माता के मंदिर का अपना एक विशेष महत्व है। कहते हैं महाराजा शिवाजीराव होलकर ने अपनी मन्नत पूरी होने पर यह मंदिर बनवाया था। भक्तगण कहते हैं यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होती है। यह मंदिर एक ऊँची टेकरी पर प्रतिष्ठित है। यहाँ से शहर का मनोरम नजारा देखने को मिलता है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- हाई स्पीड इंटरनेट सेवाओं से सुसज्जित है इन्दौर
- आधुनिक पासपोर्ट सेवा केन्द्र का संचालन इन्दौर में
- तेजी से बनी है इन्दौर में लिंक एवं फीडर सड़कें
- पर्यावरण एवं उद्यान विकास हेतु इन्दौर में योजनाएँ

Our Food Delicacies....

Dal Bati

बानगी

पेशवाओं से जागीर में मिला इन्दौर

नर्मदा घाटी के मार्ग पर व्यापार-व्यवसाय को उन्नत करने की दृष्टि से संभवतः इस स्थान का महत्व बढ़ता चला गया। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार यह कहा जा सकता है कि मराठों के मालवा में आगमन के साथ, तब के इन्दौर क्षेत्र का महत्व बढ़ता गया। कहीं कहीं उल्लेख मिलता है कि यहाँ से 24 किलोमीटर दूर स्थित कम्पेल परगने के भू-स्वामियों एवं जमींदारों का ध्यान भी इन्दौर क्षेत्र की ओर आकर्षित हुआ। तब कम्पेल को परगने की मान्यता थी। इन्दौर के एक व्यवस्थित नगर के रूप में स्थापना की कोई निश्चयात्मक तिथि या वर्ष विवरण उपलब्ध नहीं है। ऐसी संभावना लगती है कि एक बस्ती धीरे धीरे आकार लेती रही जो बाद में कस्बा, परगना और राजधानी बनी। एक पृथक, स्वात्तय सत्ता प्रमुख के रूप में होलकरों का आधिपत्य इन्दौर पर वर्ष 1730 में कायम हुआ, जब पेशवाओं ने उन्हें जागीर प्रदान की।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

सर सिरेमल बाफना

होलकर स्टेट में प्रधानमंत्री के रूप में सिरेमल बाफना ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। राज दरबार में उनकी सलाह मायना रखती थी। विशेष रूप से उद्योग जगत एवं शहर के विकास के लिए आपने महत्वपूर्ण कार्य किए।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- रामचंद्र राहगीर
- दयाल गुरु
- बापूलाल जोशी
- सुरेन्द्रनाथ दुबे

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर आकर सदैव ही सुखद अनुभूति होती है। इन्दौर एक पारिवारिक दृष्टिकोण का शहर है। यहाँ आकर ऐसा लगता है मानों अपने परिवार में आया हूँ। अपनेपन का जो भाव यहाँ छिपा है, वह कहीं देखने को नहीं मिला।''

– अटल बिहारी वाजपेयी (इन्दौर में सन् 2008)

अतिथि देवो भवः

- राजीव गांधी
- वी.पी. सिंह
- इंद्रकुमार गुजराल
- एच.डी. देवेगौड़ा

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

नारायण श्रीधर बेन्द्रे

इन्दौर में जन्में मशहूर चित्रकार नारायण श्रीधर बेन्द्रे ने कला जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। बीसवीं शताब्दी के ख्यात चित्रकारों की श्रेणी में ही उनका नाम आदर से लिया जाता है। ललित कला अकादमी ने उन्हें नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया। भारत सरकार ने पद्मश्री व पद्मभूषण तथा म.प्र. सरकार ने उन्हें प्रसिद्ध कालिदास सम्मान से अलंकृत किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

बोलिया सरकार की छत्री

एम.जी. रोड़ पर बोलिया सरकार की बहादुरी से लड़ने वाली शहीद राजकन्या भीमाबाई का विवाह गोविंदराम बुले (बोलिया) के साथ हुआ। भीमाबाई वीर यशवंतराव प्रथम की द्वितीय पत्नी महारानी लाड़ाबाई की पुत्री थी। उन्होंने ही चिमणाजी अप्पा साहब को दत्तक लिया था। दत्तक पुत्र चिमणाजी बोलिया की स्मृति में सन् 1859 में इस छत्री का निर्माण किया गया।

जो यहाँ की धरोहर है...

- शैक्षणिक एवं मेडीकल हब के रूप में ख्यात है इन्दौर
- आईआईएम इन्दौर की ख्याति चुनिंदा संस्थानों में

- आईआईटी सहित सभी बेहतर शिक्षाएँ इन्दौर में
- स्पोर्टस् कॉम्प्लेक्स से इन्दौर में खेलों को बढ़ावा

Our Glory....

I.T. Park

बानगी

उद्योग जगत की हस्तियाँ आकर्षित

मालवा का प्रमुख व्यापारिक नगर होने का गौरव इन्दौर शहर को पिछली एक शताब्दी से प्राप्त है। यहाँ के उद्योग व्यापार ने अंतरराष्ट्रीय जगत में ख्याति पाई है। मालवा की संपन्नता ने अनेक धनिक व्यापारियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। वे अपने अपने कारोबार सहित इन्दौर आ बसे। इसमें कोई संदेह नहीं कि मालवा ने उन्हें मालामाल कर दिया। ऐसे घरानों की श्रृंखला में सर्वप्रथम नाम सर सेठ हुकुमचंदजी के परिवार का आता है। उनके दादाजी श्री मानकचंदजी यहाँ मानकचंद मंगीराम नामक फर्म से व्यापार करते थे, जो संपूर्ण मालवा में प्रसिद्ध थी। इस फर्म को 1890 में ग्यारह पंच संस्था की सदस्यता प्रदान की गई, जो एक दुर्लभ सम्मान था। इसी तरह सेठ रामप्रतापजी, शिवजीराम सालिगरामजी एवं बिनोदीराम बालचंदजी, बखतराम बच्छराज, बलदेवदास गोरखराम एवं तिलोकचंद कल्याणमल की फर्मों ने भी प्रसिद्धि पाई।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

सर सेठ हुकुमचंद

इन्दौर को देश विदेश में सर सेठ हुकुमचंद की नगरी के रूप में भी जाना जाता है। इन्दौर को औद्योगिक नगरी बनाने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। धार्मिक एवं समाज सेवा के कार्यों में आप सदैव अग्रणीय रहे।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- शंकर लक्ष्मण
- राहुल बारपूते
- लक्ष्मणसिंह चौहान
- भगवती पहलवान

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर की मेहमान नवाजी से मैं अभिभूत हूँ। यहाँ जो प्यार एवं स्नेह मुझे मिला, वह मेरे लिए यादगार रहेगा। मेरे लिए सुखद अनुभूति का पल है कि आप मुझे इतना प्यार करते हैं। स्नेह के लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूँ।''

– अमिताभ बच्चन (इन्दौर में सन् 2008)

अतिथि देवो भवः

- पं. भीमसेन जोशी
- पृथ्वीराज कपूर
- सुनील दत्त
- दिलीप कुमार

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

सलमान खान

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता एवं सुपर स्टार सलमान खान का जन्म इन्दौर में हुआ। वे कथानककार सलीम खान के ज्येष्ठ पुत्र हैं। अपनी अभिनय क्षमता से उन्होंने विशिष्ट पहचान बनाई है। देश और दुनिया में लाखों की संख्या में उनके प्रशंसक हैं। सुपर हिट फिल्मों की झड़ी लगाने वाले सलमान खान ने फिल्मी जगत के अनेक ख्यात पुरस्कार भी अर्जित किए हैं।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

काँच मंदिर

शहर के मध्य क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध काँच मंदिर स्थित हैं। खासतौर पर विदेशी पर्यटक तो इस अद्‌भुत कला को निहारने के लिए यहाँ पर अवश्य आते हैं। जैन मंदिर में शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। जैन धर्म की विभिन्न पौराणिक कथाओं को कलात्मक तरीके से काँच पर उकेरा गया है। मंदिर की भीतरी दीवारें और फर्श भी काँच का है। बेजोड़ कला का यह अनुपम उदाहरण हैं।

जो यहाँ की धरोहर है...

- व्यापार में मुनाफे की दृष्टि से लाभप्रद है इन्दौर
- निवेशकों के लिए इन्दौर में व्यापक संभावनाएँ

- अनेक मल्टीनेशनल कंपनियों के उद्योग इन्दौर में
- इन्दौर के समीप कई औद्योगिक क्षेत्र विकसित

Our Goal....

Indian Institute of Management

बानगी

औद्योगिक नगरी के रूप में ख्याति

इन्दौर के विकास में महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) का नाम सम्मान से लिया जाता है। उनके शासनकाल में इन्दौर शहर में कई सड़कें बनी। सन् 1875 में इन्दौर रेल से जुड़ा जिससे यहाँ व्यापार व्यवसाय की गतिविधियों में तेजी आई। 19 वीं सदी से ही इस नगर का औद्योगिक विकास प्रारंभ हो चुका था। इसी की वजह से कालांतर में इन्दौर एक प्रमुख औद्योगिक नगर बन गया। इसका श्रेय संगठित मजदूर संघों को भी है, जिन्होंने इन्दौर को राष्ट्र के नक्शे पर स्थापित किया। कपड़ा उद्योग इन्दौर के विकास की बुनियाद रहा। तब इस उद्योग की स्थापना 1871-72 में तत्कालीन शासक महाराज तुकोजीराव (द्वितीय) ने शासकीय स्तर पर की थी। इससे इस प्रमाण को बल मिलता है कि शासन एवं व्यवसायियों में बेहतर समन्वय था जिसकी वजह से यहाँ वस्त्र व अन्य उद्योग पनपे। इन्दौर म.प्र. की औद्योगिक राजधानी बना।

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

राय रत्न सेठ श्री जगन्नाथ

सेठ जगन्नाथ ने प्रखर राष्ट्रवादी के रूप में औद्योगिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। महिला शिक्षा के वे प्रबल समर्थक रहे। दान, धर्म एवं परोपकारी सेवा कार्यों के लिए वे सदैव तत्पर रहे।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- हीरालाल कासलीवाल
- चोईथराम पागारानी
- गोविंदराम सेक्सरिया
- आर.सी. जाल

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर ऐसा शहर हैं जहाँ सभी परंपराओं के लोग मिल जाते हैं। ये लघु भारत की तरह ही है। यहाँ की संस्कृति मानवीय है। परंपरा व संस्कृति का अनूठा मेल देखने को मिलता है। व्यवहार कुशलता में यहाँ के लोग आगे हैं।''

– जयप्रकाश नारायण (इन्दौर में सन् 1975)

अतिथि देवो भवः

- राममनोहर लोहिया
- कुशाभाऊ ठाकरे
- श्रीमन्नारायण अग्रवाल
- राजनारायण

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

शशीन्द्रपाल त्यागी

एअर चीफ मार्शल शशीन्द्रपाल त्यागी का जन्म इन्दौर में हुआ। वे भारतीय सेना में विभिन्न पदों पर रहे और देश की रक्षा के लिए भी लगातार कार्य किया। खासतौर पर भारतीय वायु सेना को ऊंचे मुकाम पर ले जाने में उनकी विशेष भूमिका रही। भारत सरकार की ओर से वे परम विशिष्ट सेवा अलंकरण से सम्मानित हुए। प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया के एडीसीएस के रूप में भी कार्य किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

केंद्रीय संग्रहालय

यह इन्दौर ही नहीं वरन् मध्य भारत का केंद्रीय संग्रहालय है। इस संग्रहालय में पुरातत्व के महत्व की अनेकानेक आदिकालीन एवं पाषाण प्रतिमाएं रखी गई हैं। होलकर राजवंश की अनेक वस्तुएँ भी यहाँ प्रदर्शित की गई है। विभिन्न कालों में प्रचलित मुद्राएं, आदि अनेक जानने योग्य सामग्रियाँ यहाँ पर मौजूद हैं। संग्रहालय में अनेक पुरातन हथियार भी प्रदर्शित किए गए हैं।

जो यहाँ की धरोहर है...

- इन्दौर रीजन में आए हैं निवेश के सैकड़ों प्रोजेक्ट
- इन्दौर के पास म.प्र. का पहला स्मार्ट इंडस्ट्रीयल पार्क

- इन्दौर में जल्द से जल्द जमीन और सस्ती बिजली भी
- उद्योग संयंत्र लगाने के लिए इन्दौर में भारी रियायतें

Our Edge Makers....

बानगी

आदर्श एवं सर्वसुविधा सम्पन्न शहर

होलकर राज्य की जनता के सब प्रकार के दुःख दर्दों में शामिल महाराजा यशवंतराव होलकर द्वितीय ने इन्दौर को आदर्श और सर्वसुविधा संपन्न नगर बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। उन्होंने जनता की सभी प्रकार की सुख सुविधाओं को ध्यान में रखा और वैज्ञानिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, चिकित्सा एवं वैधानिक आदि क्षेत्रों में इन्दौर शहर को ऊँचाईयाँ प्रदान की। इन्दौर में महाराजा यशवंतराव अस्पताल, यशवंत क्लब, होलकर कॉलेज का यशवंत हॉल, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, क्रिकेट की विश्वविख्यात विजेता होलकर टीम, अनेक विद्यालय व महाविद्यालय की स्थापना की। आज भी इन्दौर की प्यास बुझाने में सहायक यशवंत सागर के साथ ही पिपल्या पाला, सिरपुर और बिलावली तालाब को जलपूर्ति के माध्यम बना कर जनता की सेवा में समर्पित करने वाले महाराजा ही थे।

Daly College

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

कर्नल सी. के. नायडू

इन्दौर को क्रिकेटर कर्नल सी.के. नायडू के नाम से भी जाना जाता है। आजादी से पूर्व में बनी पहली भारतीय क्रिकेट टीम के पहले कप्तान के रूप में सन् 1932 में इंग्लैंड के विरूद्ध खेले। पद्मभूषण से भी अलंकृत हुए।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- बाबूलाल पाटोदी
- पुरूषोत्तम विजय
- रामसिंह भाई वर्मा
- प्रकाशचंद्र सेठी

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''इन्दौर खासतौर पर क्रिकेटरों के लिए एक परंपरागत शहर है। इन्दौर ने देश को अनेक मशहूर क्रिकेटर दिए हैं। यहाँ की संस्कृति में मुझे बेहद अपनापन लगता है। अपने घर की तरह अनुकूलता का वातावरण दिखाई देता है।''

– सचिन तेंदुलकर (इन्दौर में सन् 2001)

अतिथि देवो भवः

- धनराज पिल्ले
- सुनील गावस्कर
- प्रकाश पादूकोण
- सुशील कुमार

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

राहुल द्रविड़

विश्व के प्रसिद्ध क्रिकेटरों में से एक राहुल द्रविड़ का जन्म इन्दौर में हुआ। वे भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान भी रहे। श्री द्रविड़ ने खासकर टेस्ट क्रिकेट में अनेक यादगार पारियां खेली। उन्होंने 200 से अधिक उम्दा कैच लिए एवं 270 रनों की यादगार पारी भी खेली। क्रिकेटर केप्टन मुश्ताक अली एवं कबड्डी, खो-खो के प्रशिक्षक भाऊ शिंदे ने भी इन्दौर का नाम रोशन किया।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

गोम्मटगिरि तीर्थ

पश्चिमी छोर पर जैन तीर्थ श्री गोम्मटगिरि श्रद्धालुओं की धार्मिक आस्था का केन्द्र बन गया है। यहाँ 21 फुट ऊँची भगवान बाहुबली की दिव्य एवं भव्य प्रतिमा तथा 24 जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है। पहाड़ी पर सुरम्य और प्राकृतिक पर्यावरण से आच्छादित यह तीर्थ अनुपम है। कमलपुष्प पर विराजित जैन तीर्थंकरों की ध्यानलीन, आत्मलीन मूर्तियाँ मनोहारी हैं।

जो यहाँ की धरोहर है...

- टीसीएस इंफोसिस जैसी बड़ी कंपनियाँ इन्दौर में
- निर्यात के लिए इन्दौर के समीप कंटेनर डिपो

- लॉजिस्टिक हब एयर कार्गो से इन्दौर में बढ़ेगा व्यापार
- इन्दौर संभाग में टेक्सटाईल एवं गारमेंट पार्क भी

Our Way....

बानगी

विश्व प्रसिद्ध वही कपड़ा मिलें

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ही इन्दौर की कपड़ा मिलों ने राष्ट्रीय उत्पादन में खास योगदान दिया था। युद्धोपरांत कपड़ों की मांग निरंतर बढ़ती जा रही थी। उधर देश में स्वदेशी आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। ऐसी स्थितियों में इन्दौर में सन् 1916 से 1925 के मध्य एक दशक से भी कम अवधि में निजी क्षेत्र में 5 बड़ी कपड़ा मिलों की स्थापना हुई, जिन पर निजी क्षेत्र से लगभग एक करोड़ अड़तालीस लाख रू. की पूँजी लगाई गई। मिलों की स्थापना के बाद इन्दौर नगर भारत के प्रमुख वस्त्र उत्पादक केन्द्रों में गिना जाने लगा। पूर्व स्थापित रेल्वे ने इन्हीं मिलों के लिए रक्तधमनी का कार्य किया। नगर के हजारों लोगों को रोजगार मिला व नगर में कपड़ा व्यापार बढ़ा। इन्दौर में लट्ठा, लंबे वस्त्र, चेक्स, सफेद तथा खाकी ड्रिल, रूमाल, तौलिए, धोतियों एवं साड़ियों का प्रमुख रूप से उत्पादन होता था।

International Airport

म्हारो इन्दौर

असलीदुनिया

आन

डॉ. एस. के. मुखर्जी

डॉ. श्री एस.के. मुखर्जी ने जनस्वास्थ्य के लिए स्वयं को समर्पित किया। वे इतने प्रसिद्ध हुए कि इन्दौर उनके नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान से चिकित्सक के भगवान स्वरूप को साकार किया।

इन्दौर में सक्रिय योगदान

- राजेन्द्र धारकर
- डॉ. नंदलाल बोर्डिया
- सज्जनसिंह विश्नार
- सरदार शेरसिंह

इनसे है इन्दौर की पहचान...

मान

''देवी अहिल्या की नगरी में आकर मुझे बेहद अच्छा लगा। परंपराओं का शहर है इन्दौर। यहाँ के जनमानस में एक विशेष ऊर्जा का आभास होता है। उर्जावान लोग ही स्वयं और देश की तकद्वीर बदलने की क्षमता रखते हैं।''

– घनश्यामदास बिड़ला (इन्दौर में सन् 1977)

अतिथि देवो भवः

- जमनालाल बजाज
- नारायण मूर्ति
- एल.एन. झुनझुनवाला
- करीमभाई इब्राहिम

इन्दौर तो इन्दौर ही है...

बान

शालिनी ताई मोघे

शालिनी ताई मोघे एक समाज सेविका और शिक्षाविद् के रूप में ख्यात हुई। वे शिक्षा में हिन्दी मांटेसरी की जनक और प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक थी। गरीब आदिवासी महिलाओं और बच्चों के उत्थान के लिए कार्य किया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से नवाजा। शिक्षाविद् डॉ. वासुदेव भागवत, मैत्रयी पद्मनाभन व सी.डब्ल्यू. डेविड की कर्मभूमि भी इन्दौर ही रही।

इन्दौर में जन्म...गहरा नाता

शान

हेरिटेज ट्रेन

इन्दौर के समीप, रेल्वे के 140 साल पुराने पातालपानी कालाकुंड ट्रैक पर हेरिटेज ट्रेन प्रारंभ हुई हैं। इस ट्रेन में यात्रा को लेकर पर्यटकों में भारी उत्साह हैं। इसके कोच में पारदर्शी फाइबर ग्लास लगे हैं ताकि यात्री पूरे रूट पर प्राकृतिक सौंदर्य का भरपूर लुफ्त ले सकें। टनल एवं पुल पर ट्रेन रूकती भी है। बहती नदी, झरने और वादियों के अति सुंदर नजारों से यात्रा रोमांचक हो उठती है।

जो यहाँ की धरोहर है...

- अब इन्दौर शहर बन रहा हैं स्टार्टअप हब
- इन्दौर में हेरिटेज ट्रेन से पर्यटन यात्रा की सुविधा

- अटल एवं नर्मदा एक्सप्रेस वे इन्दौर के लिए होंगे लाभकारी
- इन्दौर एवं आसपास के क्षेत्र सैलानियों की पहली पसंद

Our Administration....

Collectorate

बानगी

उत्तम जलवायु एवं भौगोलिक अनुकूलता

व्यापार व्यवसाय के क्षेत्र में उन दिनों होलकर स्टेट को बेहद ही उन्नत क्षेत्र माना जाता था। उत्तम जलवायु, भौगोलिक अनुकूलता, उपजाऊ भूमि और आयकर न होने की वजह से उद्योग व्यवसाय खूब पनपे। तत्कालीन व्यवसाय के युग से ही इन्दौर की एक खासियत यह रही कि यहाँ पर भिन्न भिन्न वस्तुओं के लिए अलग अलग मंडियाँ हैं। अनाज मंडी अलग है, बर्तन बाजार अलग है, सोने चाँदी का मार्केट भी भिन्न है, कपड़ा व्यवसाय का ठिकाना अलग है, इस तरह कारोबार व्यवस्थित चलता था। इन्दौर स्टेट के युग में मुम्बई और ब्रिटिश भारत के अन्य केन्द्रों पर यहाँ से अनाज व अफीम की बिक्री होती थी। आवक खरीदी में नमक, शक्कर, घासलेट, लोहे की वस्तुएँ खासतौर पर शामिल थी। आज के इन्दौर में भी यही परंपरा जारी है और हर वस्तु के व्यवसाय के लिए नियत ठिकाना है।